[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4028 **A**

Unique Paper Code : 62057638

Name of the Paper : विशेष अध्ययन: एक प्रमुख साहित्यकार प्रेमचंद

Name of the Course : **BA (PROG)**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) उसने भागीरथ-परिश्रम से कुल-मर्यादा का वृक्ष लगाया था, उसे अपने रक्त से सींचा था, उसको जड़ से उखड़ता देख उसके हृदय के टुकड़े हुए जाते थे। सात दिनों तक उसने दानों की सूरत तक न देखी। दिन-भर जेठ की धूप में काम करता और रात को-मुंह लपेटकर सो रहता। इस भीषण वेदना और दुस्सह

कष्ट से रक्त ही जला दिया, मांस और मज्जा को घुला दिया। बीमार पड़ा तो महीनों खाट से न उठा। अब गुज़र बसर कैसे हो? पाँच बीघे के आधे खेत रह गये, एक बैल रह गया, खेती क्या खाक होती! अंत को यहाँ तक नौबत पहुंची कि खेती केवल मर्यादा-रक्षा का साधन-मात्र रह गई। जीविका का भार मजूरी पर आ पड़ा।

अथवा

जब पंडिताइन आग लेकर निकलीं, तो वह मानो स्वर्ग का वरदान पा गया। दोनों हाथ जोड़कर जमीन पर माथा टेकता हुआ बोला-पडाइन माता, मुझसे बड़ी भूल हुई कि घर में चला आया। चमार की अकल ही तो ठहरी। इतने मूरख न होते, तो लात क्यों खाते। पंडिताइन चिमटे से पकड़कर आग लाई थी। पाँच हाथ की दूरी से घूँघट की आड़ से दुखी की तरफ आग फेंकी। आग की बड़ी सी चिनगारी दुखी के सिर पर पड़ गई। जल्दी से पीछे हटकर सिर के झोंटे देने लगा। उसके मन ने कहा-यह एक पवित्तर बाहमन के घर को अपवित्तर करने का फल है। भगवान ने कितनी जल्दी फल दे दिया। इसी से तो संसार पंडितों से डरता है।

(ख) साथ के पढे, साथ के खेले, दो अभिन्न मित्र, जिनमें धौल-धप्पा, हँसी मजाक सब कुछ होता रहता था, परिस्थितियों के चक्कर में पड़कर दो अलग रास्तों पर जा रहे थे। लक्ष्य दोनों का एक

था, उद्देश्य एक; दोनों ही देश-भक्त, दोनों ही किसान के शुभेच्छु; पर एक अफसर था, दूसरा क़ैदी। दोनों सटे हुए बैठे थे, पर जैसे बीच में कोई दीवार खड़ी हो। अमर प्रसन्न था, मानो शहादत के जीने पर चढ़ रहा हो। सलीम दुखी थाय जैसे भरी सभा में अपनी जगह से उठा दिया गया हो। विकास के सिद्धांत का खुली सभा में समर्थन करके उसकी आत्मा विजयी होती। निरंकुशता की शरण लेकर बह जैसे कोठरी में छिपा बैठा था।

अथवा

गाँव में और किसे फुरसत थी कि दौड़ धूप करता। सजनसिंह दोनों वक्त आते, लक्ष्मी को देखते, दवा पिलाते, सुभागी को समझाते और चले जातेयमगर लक्ष्मी की दशा बिगड़ती जाती थी। यहां तक कि पंद्रहवें दिन वह भी संसार से सिधार गई। अंतिम समय रामू आया और उसके पैर छूना चाहता था; पर लक्ष्मी ने उसे ऐसी झिड़की दी कि वह उसके समीप न जा सका। सुभागी को उसने आशीर्वाद दिया - तुम्हारी -जैसी बेटी पाकर तर गई। मेरा क्रिया-कर्म तुम ही करना मेरे भगवान से यही अर्जी है कि उस जन्म में भी तुम मेरी कोख पवित्र करो।

2. 'कर्बला' नाटक के कथानक पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

प्रेमचंद के साहित्यिक मूल्यों पर प्रकाश डालिए।

3. प्रेमचंद की कहानी 'सुभागी' सामाजिक बदलाव की जरूरत की ओर संकेत करती कहानी है - इस कथन की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'पंच परमेश्वर' उपन्यास की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

4. 'कर्मभूमि' उपन्यास में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर लेख लिखिए। (15)

अथवा

''कर्मभूमि' उपन्यास गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित है।' इस कथन पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (5+5)

(i) 'कलम का सिपाही' में दर्ज प्रेमचंद का जीवन संघर्ष

(ii) प्रेमचंद के कथा साहित्य में सांप्रदायिक सदभाव

(iii) 'सवा सेर गेहूँ' की अर्न्तवस्तु

(iv) 'कर्मभूमि' के स्त्री-पात्र